मुगल शासक बाबर कालीन शिक्षा व्यवस्था

प्रीति सिंह

मुगल सम्राटों का शिक्षा के प्रति लगाव और उनके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए प्रयासों के परिणामस्वरूप मुगलकाल में भारत के प्रत्येक भाग में ज्ञान–विज्ञान का तीव्रगति से प्रसार हुआ। मुगल सम्राटों का अनुसरण अन्य सामंतों और सूबेदारों ने किया। यद्यपि उच्च वर्ग के सम्पन्न लोगों का शिक्षा के प्रति लगाव एवं रूचि में निरन्तरता की कमी थी, फिर भी खुशामद प्रिय होने से उन्होंने साहित्यकारों तथा विद्वानों को संरक्षण दिया। सर अब्दुल कादिर के अनुसार मुगल सम्राटों की शिक्षा के प्रति रूचि देखकर समाज के अन्य वर्गों में भी शिक्षा के प्रति चेतना उत्पन्न हुई। विशेषकर दरबारियों ने सम्राटों के कायों और उनकी शिक्षा विषयक नीतियों का अनुगमन किया। अब्दुल अजीज ने ''हिस्ट्री ऑफ दि रेन ऑफ शाहजहा'' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि मुगलकाल के दरबारियों ने शिक्षण संस्थाएँ स्थापित की, जिनसे निम्न वर्ग के लोगों में नैतिक, कलात्मक शैक्षिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विस्तार हुआ। मुगलकाल के सम्राटों ने शिक्षा के उन्नयन एवं प्रगति में जो उल्लेखनीय कार्य किया उसकी पुष्टि उक्त दो विद्वानों के वर्णनों से हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि शिक्षा के विकास एवं प्रगति में मुगल सम्राट और मुगल दरबारी दोनों ही समान रूप से सम्मान के पात्र हैं।

बाबर का सम्बन्ध एक सुशिक्षित खानदान से था। उसका पूर्वज तैमूर और उसका नाना यूनस अपने समय के उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति थे। उसके पिता उमर शेख मिर्जा को भी अध्ययन एवं पुस्तकों से बड़ा लगाव था। बाबर का प्रारम्भिक जीवन बड़े संघर्ष में व्यतीत हुआ था। अतः उसे सुव्यवस्थित शिक्षा नहीं मिल सकी थी। लेनपूल से यह जानकारी मिलती है कि पांच वर्ष की आयु में बाबर को समरकन्द लाया गया और अगले छः वर्षों तक उसने वहाँ शिक्षा ग्रहण की थी। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा के सम्बन्ध में अधिक जानकारी नहीं मिलती है, किन्तु यह अवश्य स्वीकार किया जा सकता है कि उसके परिवार की महिलाओं ने बाबर को प्रशिक्षित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। समरकन्द में अध्ययन के बाद उसे व्यवस्थित शिक्षा नहीं मिल सकी, किन्तु अध्ययन के प्रति अनुराग, जो उसे विरासत में मिला था, के कारण जब भी उसे समय मिला उसका उपयोग उसने पुस्तके पढ़ने और लिखने में किया।[1]

वह एक अच्छा लेखक बन गया। बाबर की आत्मकथा सरल, सहज और विशुद्ध तुर्की भाषा में लिखी गयी है। लेनपूल के अनुसार यदि ऐसा कोई ग्रन्थ हो सकता है, जो प्रमाण माना जा सके और जिसके लिए किसी दूसरे प्रमाण की आवश्यकता न हो तो वह बाबर की जीवनी है। उसकी आत्मकथा से ज्ञात होता है कि शेख मजीद, खुदा–ए–बिर्दी, बाबाकुली और मौलाना काजी उसके शिक्षक थे। बाबर के वर्णन से ज्ञात होता है कि मौलाना काजी से बाबर बहुत प्रभावित हुआ था तथा उसका अतिशय सम्मान करता था। उसने इन शिक्षकों

✶ शोधार्थी, इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

से न केवल लिखना और पढ़ना सीखा वरन् जीवन जीने की शिक्षा प्राप्त की। उसने फिरदौसी का शाहनामा, निजामी और अमीर खुसरों की कविताएँ और सादी का नीतिशास पढ़ा था। उसकी आत्मकथा से यह भी जानकारी मिलती है कि सरफुद्दीन अली का जफरनामा, अबु उल मिनहाज की तबकाते नासिरी और पवित्र कुरान का उसने गहनता से अध्ययन किया था।[2]

बाबर का असली नाम जहीरूद्दीन मुहम्मद था। बाबर शब्द का अर्थ होता है – "शेर"। उसके पिता का नाम उमरशेख मिर्जा था, जो कि वीर तुर्क सरदार तैमूर का वंशज था। बाबर की माता का नाम कुतलुग निगार खानम था और वह वीर मंगोल सरदार चंगेज खां की वंशज थी। इस प्रकार बाबर में मंगोलों की क्रूरता और तुकों की योग्यता तथा साहस का समन्वय था।

बी. एन. लुनिया के अनुसार बाबर एक श्रेष्ठ विद्वान, कवि लेखक और गायक था। विद्वन्ता और साहित्यिक रूचि के कारण ही उसने गाजी खां के बहुमूल्य पुस्तकालय को अपने सैनिकों के हाथों नष्ट होने से बचा लिया था। तुर्की और फारसी दोनों भाषाओं में वह कविता करने की क्षमता रखता था। तारीखे–ए–रशीदी के लेखक और बाबर के चचेरे भाई मिर्जा हैदर दौगलत ने लिखा है कि तुर्की कविता की रचना करने में अमीर अली "शेर" को छोड़कर अन्य कोई भी बाबर की तुलना नहीं कर सकता था। उसने तुर्की भाषा में एक "दीवान" (कविता संग्रह) लिखा था। फारसी भाषा में भी उसने कविताओं की रचना की थी। बाबर की काव्य शैली "मुबायन" के नाम से प्रसिद्ध है। ललित कला प्रेमी होने के कारण बाबर का प्रेम काव्य एवं संगीत से अधिक लगाव था। उसके द्वारा लिखे गये गीत और गाने उसकी मृत्यु के बाद भी गाये जाते थे।

गद्य लिखने में भी बाबर दक्ष था। वह तुर्की तथा फारसी भाषाओं में लिख सकता था। स्वयं उसने एक लिपि शैली का आविष्कार किया था जिसे बाबरी लिपि कहा गया है तथा इस लिपि में उसने कुरान की प्रति तैयार कर मक्का शरीफ भेजी थी।[3] वह सुन्दर, स्वच्छ और आकर्षक अक्षर लिखता था। बाबर ने छन्दशास्त्र पर "मुफस्सल" नामक ग्रन्थ की रचना की थी। उसने अपने पुत्र हुमायूँ के लिए मुस्लिम कानून और अध्यात्मक पर "मुबिन" की रचना की थी।[4] बाबर कुशाग्र बुद्धि का था तथा उसकी स्मरणशक्ति अद्वितीय थी। वह भारत में आने के पूर्व हिन्दी भाषा से पूर्णतया अनभिज्ञ था, किन्तु बहुत कम समय में ही उसने बहुत सीमा तक हिन्दी सीख ली थी जैसा कि उसकी आत्मकथा में प्रयोग में लिए गए हिन्दी के शब्दों से मालूम पड़ता है।

बाबर के गद्य का सबसे श्रेष्ठ उदाहरण उसकी आत्मकथा है, जिसे "तुजक–ए–बाबरी" या "वाकियात–ए–बाबरी" या "बाबरनामा" कहते हैं। तुर्की भाषा में लिखी इस आत्मकथा ने बाबर को अमर बना दिया है। वह आत्मकथा लेखकों का "राजकुमार" के रूप में जाना जाता है। लेनपूल ने इस ग्रन्थ के विषय

में लिखा है कि यह उन मूल्यवान जीवन विवरणों में से है, जिन्हें सेन्ट अगस्टाइन, रूसो के स्वीकृत वचनों और गिबन तथा न्यूटन की आत्मकथाओं के समकक्ष रखा जा सकता है।[5]

कई विद्वानों तथा लेखकों को बाबर का संरक्षण प्राप्त था। ख्वान्दामीर 1528 ई० में बाबर के दरबार में आया था। वह अपने युग का एक ख्याति प्राप्त इतिहासकार था और वह मृत्यु पर्यन्त बाबर और बाद में हुमायूँ का संरक्षण प्राप्त करता रहा। उसका प्रसिद्ध ग्रन्थ "कानुन–ए–हुमायूँ" है। मौलाना शाहाबुद्दीन बाबर के समय का एक प्रसिद्ध कवि था। बदायूनी उसकी बहुत प्रशंसा करता है। उसने "हदीस" पर एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना की थी। शेख जैन खानी एक अन्य विद्वान था। उसने "वाकियात–ए–बाबरी" का अनुवाद किया था और कई कविताओं की रचना की थी। मौलाना–बिन–ए–अशरफ अल–हुसैनी ने जवाहिरनामा की रचना की थी। शेख जैनुद्दीन बाबर के दरबार का एक ख्याति प्राप्त विद्वान था। उसने छन्दशास्त्र पर पुस्तकें लिखी थी। मौलाना बकी ने "मखजम–ए–असराही" पर मसनवी लिखी थी। इस प्रकार बाबर ने कई विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया था तथा समय–समय पर विद्यानों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित करता था।[6]
बाबर ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि भारत में अच्छे फल नहीं होते न बरफ और शीतल जल है। यहाँ स्नानागार, अच्छे मदरसे, मशाल और शमादान भी नहीं है। बाबर का यह वर्णन निश्चित ही अतिशयोक्तिपूर्ण है क्योंकि सल्तनत युग में मदरसों की स्थापना हो चुकी थी और जौनपुर शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र भी था। भारत में आने के बाद बाबर बहुत कम समय तक ही जीवित रहा था, अतः चाहते हुए भी शिक्षा के क्षेत्र में वह अधिक कुछ नहीं कर सका। सैयद मकबर अली, जो बाबर का वजीर था, की तवारीख से मालूम पड़ता है कि बाबर ने शुहराते आम (सार्वजनिक निर्माण विभाग) को निर्देश दिया था कि अन्य कार्यों के साथ गजट प्रकाशित करने और मकतब तथा मदरसों के निर्माण पर भी पूरा–पूरा ध्यान दिया जाय। इससे सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि बावर को शिक्षा के प्रसार में पर्याप्त रूचि थी। उसने दिल्ली में एक मदरसे की स्थापना की थी, जिससे परम्परागत इस्लामी विषयों के अतिरिक्त गणित, ज्योतिष और भूगोल पढ़ाने की भी व्यवस्था थी।

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि जो शिक्षित होता है वह पुस्तकों के महत्व को जानता है और जो विद्यानुरागी होता है वह ग्रन्थों का संकलन करता है। यह तथ्य मुगलकाल के सम्राटों के लिए अक्षरशः चरितार्थ होता है। मुगल सम्राट शिक्षा और ज्ञान के संरक्षक, विद्वानों के आश्रय–दाता तथा विद्यानुरागी थे। अतः उन्होंने निजी पुस्तकालय बनाये और अलभ्य ग्रन्थों का सग्रह किया। सम्राट के पचिह्नों का अनुगमन करते हुए न केवल उनके पुत्रों एवं पुत्रियों ने वरन् उमरावें व दरबारियों ने भी व्यक्तिगत ग्रन्थालय स्थापित किए। इन व्यक्तिगत पुस्तकालयों के साथ मदरसों से सम्बद्ध छोटे या बड़े पुस्तकालय भी होते थे, जिनका उपयोग छात्र और अध्यापक करते थे। वास्तव में मुगलकाल में सम्राटों की प्रेरणा से पुस्तकालयों के निर्माण को बड़ी गति मिली थी। उस काल में बादशाहों का ग्रन्थ भेंट करने की प्रथा थी। अमीर और विद्वान समटों को प्रसन्न करने के

लिए और सम्राट पूजनीय व्यक्तियों का सम्मान करने के लिए पुस्तकें भेंट करते थे। इसके साथ ही यह भी परम्परा थी कि सम्राट को जो ग्रन्थ अच्छा लगता था उस पर वे अपने हस्ताक्षर तथा मुहर लगा देते थे तथा ग्रन्थ के सम्बन्ध में संक्षेप में अपने विचार भी टिप्पणी के रूप में लिख देते थे।[7]

मुगल सम्राटों ने पुस्तकालय के निर्माण के साथ उनकी समुचित व्यवस्था का प्रबन्ध भी किया था। वे इस सम्बन्ध में बड़े जागरूक थे और उन्होंने ग्रन्थालयों को व्यवस्थित रखने के लिए अधिकारी और कर्मचारी नियुक्त किए थे। प्रत्येक को सावधानीपूर्वक समय पर अपने–अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करना आवश्यक था और लापरवाह कर्मचारियों को तत्काल पद से हटा दिया जाता था। पुस्तकालय का सबसे बड़ा एवं जिम्मेदार अधिकारी नाजिम होता था, जो मुतामद भी कहलाता था। मुगल बादशाह किसी विश्वसनीय विद्वान अनुभवी एवं बड़े दरबारी को इस पद पर नियुक्त करते थे। प्रमादी एवं लापरवाह व्यक्ति इस पद के लिए अयोग्य समझते जाते थे। नाजिम के मुख्यतया दो काम थे। पुस्तकालय की एवं व्यव की समस्त जिम्मेदारी उस पर होती थी तथा उसे पूरा हिसाब–किताब रखना पड़ता था। इसके साथ नाजिम का दूसरा कार्य अधिनस्थ कर्मचारियों की नियुक्ति तथा पदच्युति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना था। नाजिम के बाद दूसरा अधिकारी मुहतमिम या दरोगा होता था। इस पद पर उसे रखा जाता था जो प्रबन्धकीय गुणों से युक्त एवं स्वाध्यायशील हो। यह पदाधिकारी नाजिम के निर्देशानुसार ग्रन्थालय की सम्पूर्ण आंतरिक व्यवस्था करने के साथ क्रय की जाने वाली पुस्तकों की सूची बनाना पुस्तकें क्रय करने की कार्यवाही करना इस अधिकारी का प्रमुख कार्य था। पुस्तकें क्रय करने के बाद सहयोगियों की सहायता से स्टॉक रजिस्टर में पुस्तकें चढ़ाना और विषयवार कैटलॉग तैयार करना मुहतमिम का दूसरा बड़ा कार्य था। सहायक कर्मचारियों में कार्य बंटवारा करना और उनके कार्य की देखभाल करना भी दारोगा का उत्तरदायित्व था। केटलॉग का संधारण करना, पुस्तकों का अंकन करना और क्रम से पुस्तकें आलमारियों में रखना सहायक कर्मचारियों का मुख्य काम था, जिससे पाठक को इच्छित ग्रन्थ सुगमता से मिल सके। सहायक कर्मचारियों के अतिरिक्त चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भी ग्रन्थालय में नियुक्त किए जाते थे। सहफ और वारक नामक कर्मचारी पुस्तकालय में सफाई रखते, समय–समय पर पुस्तकों की सफाई करते और प्रत्येक पृष्ठ को उलट कर देखते तथा पृष्ठ आपस में चिपक गए हों तो उन्हें अलग करना इनका काम था।

उपर्युक्त अधिकारी एवं कर्मचारी लगभग सभी पुस्तकालयों में होते थे, किन्तु कुछ बड़े–बड़े पुस्तकालयों में अच्छे जिल्दसाज रखे जाते थे, जिनका काम फटी हुई या कमजोर जिल्द को ठीक करना होता था जिससे ग्रन्थ सुरक्षित रहे। पुस्तकों में दृष्टांत चित्र और पृष्ठ के चारों ओर आकर्षक चित्रकारी करने के लिए निपुण चित्रकार भी नियुक्त किए जाते थे। बाबर के समय से पुस्तकों को सुन्दर बनाने की कला प्रारम्भ हुई और जहांगीर के समय में जो चित्रकला का महान संरक्षक था, उच्चतम शिखर पर पहुँच गई। खुशनवीस भी पुस्तकालयों में होते थे, जो सुन्दर अक्षरों में पुस्तकों एवं पाण्डुलिपियों की आवश्यकतानुसर प्रतियाँ तैयार करते थे। तैयार की गई प्रतिलिपि का मूल से मिलान करने के लिए मुकाबिला नवीस नियुक्त थे।[8]

मुगल साम्राज्य का संस्थापक बाबर विद्या प्रेमी था और एक लेखक एवं कवि के रूप में प्रसिद्ध रहा है। उसकी आत्मकथा तुजक–ए–बाबरी ने उसे एक लेखक के रूप में अमर बना दिया है। उसे अध्ययन से बड़ा लगाव था तथा जब भी उसे समय मिलता था वह उसका उपयोग पढ़ने या लिखने में करता था। हीरात निवासी हुसैन को, जो बाबर का मंत्री था, ग्रन्थों से बड़ा अनुराग था। अतः उसने उस समय की मूल्यवान पुस्तकों का संग्रह कर एक पुस्तकालय बनाया था।[9] इससे बाबर को बड़ी प्रेरणा मिली तथा उसने भी जैसा कि उसकी आत्मकथा से ज्ञात होता है, अपना व्यक्तिगत पुस्तकालय बनाया। बाबर ने मिलवत पर अधिकार करने के साथ ही गाजी खां के पुस्तकालय पर भी 1525 ई. में अधिकार कर लिया था। वह अपनी आत्मकथा में लिखता है कि, मैं गाजी खां के पुस्तकालय में गया वहाँ कुछ दुर्लभ पुस्तकें मुझे मिली। इनमें से कुछ मैंने हुमायूँ को पढ़ने के लिए दी तथा कुछ पुस्तकें कामशन के पास कंधार भिजवा दी। बाबर के इस लेख से यह स्पष्ट हो जाती है कि उसे पुस्तकों से बड़ा लगाव था। साथ ही हमें यह जानकारी मिलती है कि वह अपने पुत्रों में भी पढ़ने की अच्छी आदत का विकास करना चाहता था। इसीलिए तो उसने हुमायूँ और कामरान के पास कुछ अच्छे ग्रन्थ भेजे थे। बाबर की आत्मकथा से जानकारी मिलती है कि अब्दुल्ला बाबर का प्रिय और योग्य साथी था। उसने प्रशासन में सेनापति के रूप में और पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में बाबर की बड़ी सेवा की थी। अब्दुल्ला ने बाबर के पुस्तकालय को व्यवस्थित बनाया था। बाबर के पुस्तकालय का उपयोग उसके सम्बन्धी और उमराव भी करते थे।

इस प्रकार बाबर ने शाही पुस्तकालय की स्थापना की परम्परा का श्री गणेश किया। बाबर के उत्तराधिकारियों ने इस स्वास्थ परम्परा को न केवल बनाए रखा वरन् समृद्ध भी बनाया।

संदर्भ :

1. आ. एस. एम. जफर, ऐजुकेशन इन मुस्लिम इण्डिया, पृ० 163.

2. बी. एन. लुनिया, मुगलकालीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ० 98.

3. अ. बी. एन. लुनिया, पृ. 98.

4. बेवेरिज वावर नामा, भाग 2, पृ. 518.

5. डॉ. ए. एल. श्रीवास्तव, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ. 91.

6. अ. डॉ. पी. एन. चौपड़ा, पृ. 169.

7. डॉ. बी. के. सहाय, पृ. 120–21.

8. बेवेरिज बाबरनामा, भाग–1, पृ. 27.

9. अ. इलियट और डाउसन, भाग 5, पृ. 111.